

डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिकी सत्र 3A द गार्डन स्टोरी

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज द्वारा उत्पत्तिकी पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3A, द गार्डन स्टोरी, भाग 1, उत्पत्ति 2:4-3:24 है।

सत्र 3 द गार्डन स्टोरी है। अध्याय 2, श्लोक 4 में पीढ़ियों के उपरलिख के अंतरगत, उद्यान की कहानी अध्याय 4, श्लोक 26 तक पहुंचती है। उद्यान की कहानी को समझने का एक और तरीका इसकी वषिय-वस्तु के संदर्भ में है, इसलिए अध्याय 2, श्लोक 4 से लेकर अध्याय 3 के अंत, श्लोक 24 तक, ये दो अध्याय उद्यान के अंदर की घटनाओं से संबंधित हैं। अध्याय 4, श्लोक 1 से 26, उद्यान के बाहर मानव परिवार के साथ क्या होता है, उससे संबंधित है।

तो, आइए सबसे पहले बात करते हैं कि अध्याय 2 में सृष्टिकी वर्णन अध्याय 1 से किस तरह संबंधित है। मैंने पहले भी कहा था कि अध्याय 1 और 2, सृष्टिकी दो वर्णन, एक दूसरे के पूरक हैं, और यह संबंध ऐसा है जिसमें सामान्य सृष्टिकी छठे दिन के संदर्भ में नरिदष्टि किया गया है जब मानव परिवार को परमेश्वर ने अपनी छवि में बनाया था। इसलिए, जब हम अध्याय 2, श्लोक 4 के उपरलिख को देखते हैं, तो आप पाएंगे कि यह अध्याय 1, श्लोक 1 की परतधिर्ना दिखाता है। मैं अध्याय 2, श्लोक 4 को देखकर आगे बढ़ता हूँ। यह आकाश और पृथ्वी का वर्णन है, या हम कह सकते हैं कि आकाश और पृथ्वी की पीढ़ियाँ जब वे बनाए गए थे। तो ध्यान दें कि यह वह भाषा है जो आपको अध्याय 1, श्लोक 1 में मलैगी - जब प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश बनाए थे, तब से जारी है।

इसलिए, हम देखेंगे कि शुरुआती श्लोक के साथ एक समानता है, और फिर हम अध्याय 1, श्लोक 2 और अध्याय 2, श्लोक 5 और 6 में जो हमने खोजा था, उसके बीच एक समानता पाएंगे। अध्याय 1, श्लोक 2 और उसके बाद, आप देखेंगे और याद रखेंगे कि अध्याय 2, श्लोक 2 में बताया गया है कि श्लोक 3 में परमेश्वर के कहने से पहले पृथ्वी कैसी थी, प्रकाश हो। हमने जो सीखा वह यह था कि अनुत्पादक पृथ्वी, और फिर खाली, नरिजन पृथ्वी, मानव जीवन को सहारा देने के लिए अनुकूल नहीं थी। और इसलिए, पहले तीन दिनों में, परमेश्वर ने संबोधित किया कि कैसे पृथ्वी अनुत्पादक थी, लेकिन फिर भी तीसरे दिन, यह वनस्पति पैदा करती है।

और फिर दिन चार, पाँच और छह एक नरिजन पृथ्वी को दर्शाते हैं, लेकिन परमेश्वर ने दिन चार, पाँच और छह में हवा में पक्षियों से सृष्टिकी भर दिया, और आपके पास समुद्र की मछलियाँ हैं, और फिर छठे दिन भूमिकी जानवर हैं, और फिर मानव परिवार है। लेकिन श्लोक 2 और श्लोक 3 के बीच अंतर होगा। यदि आपको याद हो, तो श्लोक 2 में हमारे पास तीन खंड थे, परमेश्वर के कहने के समय की परस्थितियों के तीन विवरण, प्रकाश हो। और पहले मामले में, हमारे पास पृथ्वी का वह विवरण था जो नरिकार और खाली था।

और फरि समुद्री जल था। और तीसरा, हालाँकि यह सरिफ़ सामान्य बातचीत के लिए था, अराजकता, यह परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबंधन की उपस्थिति से सीमति थी। और यह आपका तीसरा वर्णन होगा।

जब अध्याय 2, श्लोक 5 और 6 की बात आती है, तो इसी तरह, हमारे पास तीन परस्थितियाँ हैं जिनका वर्णन श्लोक 7 में परमेश्वर के कहने से पहले किया गया है, या बल्कि श्लोक 7 में कथा कहती है, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। ऐसा इसलिए जरूरी था ताकि एक ऐसा उद्यान हो जो ऐसी वनस्पति पैदा करे जो मानव जीवन को बनाए रखे। पहली परस्थिति यह है कि श्लोक 5 में, मैदान का कोई भी पौधा अभी तक धरती पर नहीं दिखाई दिया था।

और दूसरा, खेत में अभी तक कोई पौधा नहीं उग पाया था। तीसरा पद 6 में पाया जाता है, लेकिन धरती से धाराएँ निकलीं और जमीन की पूरी सतह को सींचा। पद 5 और 6 के बीच, या पद 5 के अंत में, हमें कारण बताया गया है कि कोई पौधा क्यों नहीं उग पाया।

ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान परमेश्वर ने धरती पर बारिश नहीं भेजी थी, और कोई किसान नहीं था। जमीन पर काम करने के लिए कोई माली नहीं था। और इसलिए, परमेश्वर ने उन परस्थितियों को पलटने और एक किसान को पैदा करने और फरि बगीचे की खेती करने का काम शुरू किया।

उदाहरण के लिए, अध्याय 2 की आयत 15 कहती है, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लिया और उसे अदन के बगीचे में काम करने और उसकी देखभाल करने के लिए रखा। अब, अध्याय 1 और अध्याय 2 से 4 के बीच कुछ अंतर क्या है? और वह यह है कि कहानीकार के लिए हमें सृष्टि के दो विवरण देना क्यों फायदेमंद है? खैर, उत्पत्ति अध्याय 1 में, समरूपता पर जोर दिया गया है, इन छह दिनों के संगठनात्मक सिद्धांत और एक, सातवें दिन पर। तो यह हमें बताता है कि परमेश्वर एक महान डिजाइनर था और वह क्रमिक रूप से एक लक्ष्य पर लक्ष्य कर रहा था जिसे उसने हासिल किया।

हमारे पास बार-बार दोहराए जाने वाले सूत्र हैं। उदाहरण के लिए, याद रखने के लिए सबसे अच्छा यह है कि शाम थी, सुबह थी, और फरि पहला, दूसरा और तीसरा दिन था। साथ ही, आपको याद होगा कि अध्याय 1 में एक सार्वभौमिक सैटिंग है।

इसका वर्णन ब्रह्मांडीय है, और पाठकों के रूप में हम दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ते हैं, इसलिए इसकी गति बहुत तेज़ है। साथ ही, ईश्वर का नाम, एलोहिम, जिसका सीधा सा अर्थ है ईश्वर, हब्रू शब्द एलोहिम को ELOHIM लिखा जाता है। ईश्वर के लिए इस नाम को आमतौर पर इस बात पर जोर देने के रूप में समझा जाता है, जैसा कि हम इस अध्याय में पाते हैं, ईश्वरत्व और दवियता के विचार पर।

और इस अध्याय में, सर्वशक्तमिान, सर्वशक्तमिान ईश्वर जो बोलता है और ब्रह्मांड का निर्माण करता है। और फरि तकनीकी भाषा का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, शब्द बनाएँ, हब्रू में इस शब्द में बारा, बारा, बारा है, जिसका उपयोग पुराने नियम में तब किया जाता है जब ईश्वर वषिय होता है ताकि इसे एक विशेष भाषा के रूप में लिया जा सके जो

ईश्वर क्या करता है, ईश्वर क्या बनाता है, इसका उल्लेख करता है। फरि, शब्द, उदाहरण के लिए, छवि, फरि से, बहुत नरिदष्टि, स्पष्ट तकनीकी भाषा होनी चाहिए जसै समझाया और व्याख्या कया जाना चाहिए।

पछिली बार जब हमने ईश्वर की छविके बारे में बात की थी, तो आपको याद होगा कहिम इस बारे में बात कर रहे थे क ईश्वर ने पुरुष और महिला को इस तरह से बनाया क उनमें साझेदारी हो, संबंधों के आधार पर साझेदारी की संभावना हो, और ईश्वर में व्यक्तित्व हो, और पुरुषों और महिलाओं में व्यक्तित्व हो। अब, जब मैं व्यक्तिके बारे में बात करता हूँ, क कैसे पुरुष और महिलाएं व्यक्ता हैं, और ईश्वर एक व्यक्ता है, तो मैं नहीं चाहता कहिमें यह नषिकरष नकाले क ईश्वर बेलिकूल वैसा ही है जैसा हम व्यक्ता हैं। यह व्यक्तिकी भाषा है जो हमें, सादृश्य द्वारा, यह समझने में मदद करती है क वह एक प्राणी है, एक व्यक्तगित प्राणी है, एक सजीव प्राणी है, न क केवल एक सदिधांत, न केवल वह, न केवल एक शक्ता, इनमें से कोई भी चीज नहीं, बल्क एक व्यक्तगित प्राणी है।

जब सादृश्य बनाने की बात आती है, तो यह एकमात्र तरीका है जसिसे ईश्वर हमसे प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है कयोंक हम सीमति हैं, और हमारी सीमाएँ हैं, जबक वह बनिा कसी सीमा के अनंत है। इसलए, जब समीकरण बनाने की बात आती है, तो हम चीजों की तुलना करके समीकरण बना सकते हैं कयोंकहिम समीकरण के दोनों पक्षों को जानते हैं। तो, यहाँ एक उदाहरण है जहाँ हमारे पास, मान लीजए, एक पीली गेद है, और फरि सूर्य है, जो अपने सामानय चरतिर में पीला है, और इसलए हम समीकरण के दोनों पक्षों को जानते हैं, और हम दोनों के बीच कुछ सादृश्य देख सकते हैं, सूर्य और फरि एक पीली गेद।

लेकनि जब बात ईश्वर की आती है, तो हम समीकरण का केवल आधा हसिसा ही जानते हैं, और वह है मानवीय अनुभव और ज्ञान। हम ईश्वर के बारे में जो कुछ भी जान सकते हैं, उसके बारे में पूरी तरह से सीमति हैं। ईश्वर अपने बारे में सबसे जरूरी बातें बताता है ताकहिम अपने सृष्टकिरता के साथ उस खास रशिते का आनंद उठा सकें।

इसलए, हम मसीह के मन को जान सकते हैं, हम परमेश्वर, हमारे सृष्टकिरता और उसके पुत्र के मन को व्यक्तगित रूप से जान सकते हैं, लेकनि केवल इसलए कयोंक परमेश्वर ने अपने मन को प्रकट करना चुना है। इसलए, हमारे पास वह है, लेकनि हमारे पास उसका पूरा मन नहीं है। अब, जब अध्याय दो और चार की बात आती है, तो हम काफी वरिधाभास पाते हैं, जबक अध्याय एक में एक उच्च गद्य है, और अध्याय दो से चार में, हम अचानक एक परचितिता पाएंगे।

यह बहुत ही सांसारकि है। यह एक कथात्मक कथानक वाली कहानी है जसिमें प्रतीभागियों के साथ प्रत्यक्ष भाषण और अप्रत्यक्ष भाषण, कारण और प्रभाव परविरतन है जो आप आमतौर पर एक कथात्मक कथानक में देखते हैं, और यह इस घटना से लेकर उसके परिणाम या परिणाम तक अत्यधिक प्रकरयात्मक है। फरि, आप पाएंगे क उद्यान एक स्थानीय सेटगि बनाम सार्वभौमकि सेटगि है, जो ब्रह्मांडीय है।

फरि छठे दुनि धीमी, केंद्रति गति होती है। अब, अध्याय दो और उसके पद चार के बारे में जो बात खास है, वह यह है क हमारे पास परमेश्वर के लिए एक और नाम है जो अध्याय एक में पाए गए नाम, परमेश्वर, एलोहमि के साथ जुड़ा हुआ है। यह अध्याय दो, पद चार में पाया जाता है, जहाँ शब्द यहोवा का उल्लेख कया गया है।

इसके अलावा, यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छोटे अक्षरों में है। जब भी आप ओल्ड टेस्टामेंट के अंग्रेजी अनुवाद को पढ़ते हैं, जहाँ आपके पास छोटे अक्षर हैं, बड़े अक्षरों में भगवान, तो यह एक हब्रू शब्द का अनुवाद है जो विशेष है, जो अद्वितीय है, और यह हब्रू नाम है, याहवे। मैं इसे याहवे लिखूँगा।

पुराने नियम में यहोवा को इस्राएल के वाचा परमेश्वर के रूप में पहचाना गया है। और वह इस नाम से जाना जाता है, जिसे उसने प्रकट किया है, और उसने यहोवा नाम के महत्व को समझाया है। आप इसे नरिगमन में पाएंगे, और आप इसे, उदाहरण के लिए, नरिगमन अध्याय तीन और नरिगमन अध्याय छह में पाएंगे, साथ ही नरिगमन अध्याय 33 और 34 में भी पाएंगे, जहाँ यहोवा के नाम की व्याख्या की गई है।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि मूसा के समय से पहले यहोवा नाम अज्ञात था, बल्कि यह कि मूसा के समय में यह नाम पूरी तरह से समझा और समझाया गया था। इसलिए, अध्याय दो, श्लोक चार में ही यहोवा नाम आता है। साथ ही, महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्याय चार के अंतिम श्लोक में लिखा है कि उस समय, लोगों या पुरुषों ने यहोवा के नाम से पुकारना शुरू कर दिया था, जिसका अर्थ है कि यहोवा के नाम के तहत और उसके द्वारा परमेश्वर की एक सामान्य पूजा थी।

इसके अलावा, अध्याय दो से चार में, आप पाएंगे कि यह एक गैर-तकनीकी, आम बातचीत की तरह की भाषा है, और इसमें कई शब्द खेल हैं। यह वह जगह है जहाँ वर्णन अर्थ को बढ़ाने के लिए भाषा का उपयोग किया जाता है। और एक बहुत अच्छा, निश्चित रूप से, एक में पाया जाएगा जिसे आप शायद पहले से ही जानते हैं, और वह अध्याय दो, श्लोक 23 में पाया जाता है।

आदमी ने कहा, यह अब मेरी हड्डियों की हड्डी है, जिसका संदर्भ महिला, हवा और मेरे मांस का मांस है, उसे बुलाया जाएगा, और मैं अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए इसका गलत उच्चारण करूँगा, हाय आदमी, क्योंकि उसे आदमी से निकाला गया था। तो, अंग्रेजी में एक नाटक दिखाया जा रहा है, और यह सौभाग्य की बात है कि आप इसे अंग्रेजी में कर सकते हैं, कि एकता है, हाय आदमी और आदमी के बीच एक संबंध है। हब्रू में, आप इसे सुनते हैं, हाय आदमी, महिला के लिए हब्रू में शब्द इश, शाह, इश, इश, इश, और फरि शाह, शा है।

और यहाँ मनुष्य के लिए शब्द है इश, इश, इश। तो, ये ऐसे शब्द खेल हैं जो हब्रू कथा में अक्षर होते हैं, और यह सिर्फ एक उदाहरण है। तो, जब आप एक साथ लेते हैं, तो अध्याय एक ईश्वर के सर्वशक्तिमान अधिकारिक वचन की गवाही देता है, जो पूरी तरह से अलग है, प्राणियों से, सृष्टि से बिल्कुल अलग है, और फरि उसने कैसे मानव जीवन को बनाए रखने के लिए सृष्टि को डिज़ाइन किया है, और कैसे उसने मानव जीवन को व्यक्तियों के रूप में उससे संबंधित होने की क्षमता के साथ बनाया है, और यह कि एक उत्सव का सातवाँ दिन है, एक ऐसा दिन जब एक दिन पवतिर, पवतिर और पूरी तरह से ईश्वर की सृष्टि की पूजा और उत्सव में नरिदष्टि होता है।

जब आप इसे एक साथ लेते हैं और अध्याय दो से चार के साथ इसकी तुलना करते हैं, तो आपको ईश्वर की ओर से वाचा प्रतिबद्धता का पूरक विचार मिलता है। हम पाएंगे कि सृष्टि और पुरुष, सतरी, में ईश्वर की सृष्टि के अच्छे उपहारों का आनंद लेने की क्षमता है, विशेष रूप से उस बगीचे में, और यह कि

ईश्वर का मानवता के साथ एक विशेष संवाद है, न कि जो हम प्राणियों, अन्य प्राणियों में पाते हैं। मुझे यह भी बताना चाहिए कि जैसे-जैसे हम अध्याय दो और तीन का अनुसरण करते हैं, अध्याय दो में एक अंतर होता है, जहाँ एक सामंजस्य है, ईश्वर और मानवजातिका एक समुदाय है, मानवजातिका और कैसे मानवजातिका के भीतर महिला और पुरुष के बीच सामंजस्य है, और फिर कैसे पुरुष और महिला, मानवता और बगीचे के प्राणियों के बीच भी शांति है।

यह दुखद रूप से अध्याय तीन में जो हम पाते हैं उसके परिणामस्वरूप बाधित होगा, और वह है पुरुष और महिला की ओर से अवज्ञा। अब, इन सामंजस्यपूर्ण रश्तियों में चीजें टूट गई हैं। हम पाएंगे कि यह सबसे महत्वपूर्ण, सबसे महत्वपूर्ण रश्तिता तब टूट जाता है जब सारी सृष्टि अध्याय एक में प्रभु के वचन का पालन करती है, और ऐसा ही हुआ, और ऐसा ही हुआ, और ऐसा ही हुआ।

लेकिन अध्याय तीन में, हम पाते हैं कि मानवता प्रभु की अवज्ञा करना चुनती है, और इसलिए एक टूटा हुआ रश्तिता है। परमेश्वर का अपने सभी प्राणियों, पूरी मानवता के साथ एक सृष्टिकरता का रश्तिता है। लेकिन हम यहाँ जसि रश्तिता की बात कर रहे हैं, वह एक ऐसा रश्तिता है जो परमेश्वर द्वारा मानवता के लिए और उसके माध्यम से प्रदान किया गया है और जसि पुनःप्राप्त किया जाएगा।

और इसलिए, हम ईसाई पाठकों के रूप में जानते हैं, यह प्रभु यीशु मसीह में ईश्वर के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जो हमें ईश्वर से मिलाता है और सुधारता है, लेकिन यह हमारे पहले माता-पिता और ईश्वर के बीच के रश्तिता से भी आगे निकल जाता है। इसके अलावा, अध्याय तीन में, हम पाएंगे कि मानव परिवार के भीतर एक टूटन है। न्याय के वचनों में, जसि हम कुछ ही कर्षणों में पढ़ेंगे, संघर्ष है, स्त्री और पुरुष के बीच एक लड़ाई है।

और यह हमें अध्याय तीन, श्लोक 16 में मिलाता है। पछिली बार की चर्चा में, हमने अध्याय 3:15 में स्त्री की संतान और सर्प की संतान के बीच लड़ाई के बारे में बात की थी। तो, सर्प पशु जगत का प्रतिनिधित्व करता है, आप देखते हैं कि वहाँ एक दरार है, पुरुष और महिला और पशु जगत के अन्य प्राणियों के बीच उस शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में एक टूटन है।

अब एक नज़र है, हम एक साथ देख सकते हैं कर्षणों में मनुष्य के निर्माण के विवरण के माध्यम से काम करता है। लेकिन पहले, बस ध्यान दें कि बगीचे को संकीर्ण करने और इसके खेती करने वाले के निर्माण पर जोर दिया गया है। आप देखेंगे कि पाँचवें श्लोक में यह वर्णन का उपयोग करता है, अभी तक पृथ्वी पर प्रकट नहीं हुआ था।

अब, इस शब्द पृथ्वी का अनुवाद भूमि के रूप में भी किया जा सकता है। और मुझे लगता है कि यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि हम पृथ्वी से भूमि पर जाते हैं और भगवान ने भूमि पर बारिश नहीं भेजी थी। यहाँ नए अंतरराष्ट्रीय संस्करण में पृथ्वी का अनुवाद किया गया है, लेकिन हम पृथ्वी से एक विशेष भूमि पर जाते हैं जसिका अब वर्णन किया गया है।

और मैं इसे भूमि के रूप में कर्षणों बोलता हूँ इसका कारण यह है कि यह पद्य छठी में भूमि के बारे में बात करता है, लेकिन भूमि से नदियाँ निकलती हैं और

भूमि की पूरी सतह को सींचती हैं। इसलिए, हम पृथ्वी से भूमि की ओर बढ़ते हैं। और फिर, यदि आप पदम आठ को देखें, तो अब प्रभु परमेश्वर ने पूर्व में अदन में एक बगीचा लगाया था।

तो, यह बगीचा एक ऐसे कषेत्र में है जिसे ईडन के रूप में पहचाना जाता है। यह करीब या स्पष्ट हो जाएगा। यदि आप मेरे साथ फिर से श्लोक 15 को देखें, तो प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लिया और उसे ईडन के बगीचे में रखा।

तो, यह एक ऐसा बगीचा है जो ईडन में दिखाई देता है। हम धरती से जमीन पर ईडन की ओर बढ़ते हैं, और फिर ईडन के कषेत्र के भीतर विशिष्ट बगीचा, कषयोंगय हो जाता है क्योंकि इसमें एक अच्छा जल स्रोत है जिसे हम श्लोक 10 से 14 में पाते हैं। तो शुरू में, वहाँ धाराएँ थीं, और इसका अनुवाद धुंध किया जा सकता है।

यह शायद भूमिगत जल होगा; हम निश्चिती रूप से नहीं जानते, जो भूमिगत के लिए कुछ पानी उपलब्ध कराता था। इसके भीतर, ईडन में इस कषेत्र में नदियाँ होंगी, जिनकी पहचान श्लोक 10 से 14 में की गई है। इनमें से दो नदियाँ जिनमें हम जानते हैं, वे हैं टगिरसि-फरात, जो दक्षिणी इराक में होंगी, जहाँ ये दोनों नदियाँ मेसोपोटामिया में मिलती हैं।

अन्य दो नदियाँ जिनमें हम नहीं जानते, वे हैं पशोन और फरि गशोन। पशोन और गशोन, यह तुकांत दोहा, हम उनके बारे में नहीं जानते। और इसे साहित्यिक रूप से यह कहने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है कि यहाँ दो प्राचीन नदियाँ हैं जो अब पुनःप्राप्त करने योग्य नहीं हैं।

लेकिन यह हमें उस सामान्य कषेत्र को समझने में मदद करता है जहाँ उद्यान पाया गया था। और हम पुरातात्विक रूप से प्राप्त अवशेषों और भूवैज्ञानिक इतिहास के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उससे हम जानते हैं कि सभ्यता का केंद्र मेसोपोटामिया घाटी में था।

अब, आइए श्लोक 7 में मनुष्य के निर्माण के बारे में बात करते हैं। श्लोक 7 में, हमारे पास ऐसी भाषा है जो ईश्वर को अत्यधिक मानव रूपी शैली में दर्शाती है।

दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर का वर्णन वैसे ही कर रहा है जैसे हम किसी मनुष्य का वर्णन करते हैं। इसलिए, श्लोक 7 में, हमें बताया गया है कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मट्टी से बनाया और उसके नथुनों में जीवन की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। सबसे पहले, शब्द बनाया वह शब्द है जिसका उपयोग कुम्हार द्वारा किया जाता है जो मट्टी को मट्टी के बरतनों में ढालता है।

और इसलिए, आपके पास ईश्वर का एक अत्यधिक मानव रूपी, अंतरंग वर्णन है जो जमीन की धूल का उपयोग करके मनुष्य के निर्माण पर मंडरा रहा है और इसे एक आदमी के रूप में आकार दे रहा है। अब, क्योंकि यह धारा है, यह सबसे अच्छा समझा जा सकता है कि यह धूल जैसा पाउडर नहीं था, बल्कि मट्टी के साथ था, और फिर सतह के पानी, मट्टी और कीचड़ को आकार दिया जा सकता था और बनाया जा सकता था। फिर, हमें बताया गया है कि भगवान, मट्टी की आकृति पर मंडराते हुए, जीवन की साँस फूँकते हैं।

यह जीवन का शकृत स्रोत है। और इसलिए, इस साँस लेने से, आकृतिसिजीव, जीवित हो जाती है। तो, आपने यहाँ सुझाव दिया है कि

जब भगवान की रचना की बात आती है तो हमारे पास एक सजीव और एक नरिजीव होता है, इसलिए हमारे पास शरीर और फरि मानव आत्मा है।

और शरीर और मनुष्य की आत्मा जीवति हो जाती है। और इसलिए, इसका परणाम यह हुआ कि मनुष्य एक जीवति प्राणी बन गया, और वह शब्द 'बन गया' हमारे अनुवाद में महत्वपूर्ण है। वह शब्द, हमारे अनुवादों में होने के कारण, पारंपरिक रूप से एक जीवति आत्मा बन गया।

न्यू इंटरनेशनल संस्करण और कई अन्य संस्करणों में जसि हब्रि शब्द का अनुवाद कथिा गया है, वह शब्द नेफेश है। नेफेश। और मैं इसे आपके लिए लिखूंगा। नेफेश। नेफेश। नेफेश।

और जब आप नेफेश शब्द पर अध्ययन करेंगे, तो आप पाएंगे कि यह शब्द आत्मा शब्द की तुलना में अर्थ और उपयोग में व्यापक है। होने का कारण यह है कि नेफेश शब्द का अर्थ संपूर्ण इकाई, संपूर्ण व्यक्तता हो सकता है, न कि केवल अमूर्त। आत्मा केवल अमूर्त का सूचक हो सकता है और शरीर को ध्यान में नहीं रखता है।

आत्मा के साथ एक समस्या यह है कि इसे हमारे समकालीन पाठकों द्वारा एक शाश्वत सिद्धांत, एक शाश्वत अस्तित्व के रूप में गलत समझा जा सकता है, जैसा कि हम ग्रीक दर्शन में पाते हैं जो आत्मा को सार्वभौमिक ईश्वर, सार्वभौमिक आत्मा के व्युत्पन्न के रूप में समझता है। हालांकि बाइबल में, हमें यह समझना चाहिए कि आत्मा को उस तरह से नहीं समझा जाता है, बल्कि बाइबल का विचार एक व्यक्तता का संपूर्ण अस्तित्व है। उदाहरण के लिए, उन अंशों में है जहाँ आपके पास एक चतिनशील भजनकार है जो मेरी आत्मा के बारे में बोलता है, और वह अपने बारे में चतिनशील, आंतरिक रूप से, आंतरिक रूप से सोचना शुरू कर देता है, और वह अपनी आत्मा, अपने अस्तित्व से बात करता है।

या फिर हम पाते हैं कि कोई व्यक्ति मर चुका है, उसे मृत नेफेश, मृत प्राणी के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इसलिए होना बहुत उपयोगी है और, मुझे लगता है, यहाँ जो कुछ घटित होता है उसका सटीक प्रतिपादन है, कि मनुष्य कोई शाश्वत सिद्धांत या शाश्वत आत्मा नहीं है; वह नशिचति रूप से नश्वर है, और यहाँ नेफेश का अर्थ है एक जीवति प्राणी बनाम एक मृत प्राणी। लेकिन एक संपूर्ण प्राणी जसिमें व्यक्तित्व है।

एक और छवि है जो अत्यधिक मानव रूपी है, और वह सूत्री के निर्माण के साथ पाई जाती है। और पद 20 के उत्तरार्ध से शुरू करते हुए, पुरुष के लिए, या हम अपने कुछ संस्करणों में अनुवाद करना शुरू कर सकते हैं, व्यक्तगित नाम एडम। आदमी एडम है, और नशिचति रूप से आपके पास व्यक्तगित नाम एडम है, और यह उन कई शब्दों में से एक है जो आदमी के नाम, एडम पर खेलते हैं।

संस्करण इस बात पर असहमत होंगे कि कब इसका अनुवाद व्यक्तगित नाम के रूप में किया जाना चाहिए या कब इसका अनुवाद सामान्य ध्वनि, मनुष्य के रूप में किया जाना चाहिए। लेकिन आप एडम के साथ शब्दों का खेल सुन सकते हैं, जो कि मनुष्य है, और फिर उस भूमि के लिए शब्द जसिसे मनुष्य की रचना हुई, और वह है, मैं इसे धीरे-धीरे उच्चारण करूंगा, आदम। एडम और आदम।

और इसलिए, यह नश्चिन्ता रूप से मनुष्य की कमजोरी को दर्शाता है; मनुष्य कमजोर है, और मनुष्य सीमाती है। इसलिए, जब सूत्री के निर्माण की बात आती है, तो हम श्लोक 21 में पाएंगे का भगवान ने पुरुष की एक पसली ली, ऐसा कहा जाता है कि यह पारंपरिक रूप से, आम तौर पर आपके अनुवादों के तरीके से है, जसि तरह से लोगों ने इसे समझा है, लेकिन इसका वास्तव में मतलब सरिफ एक कनिरा है, जैसे नाव का कनिरा। मुद्दा यह है कि उसने पसली या पसलियाँ लीं, पुरुष का कनिरा, और उसे बंद करके पुरुष पर सर्जरी की।

लेकिन ध्यान दें कि श्लोक 21 में कहा गया है कि पुरुष गहरी नींद में सो जाता है। और यह बहुत उपयोगी है क्योंकि पुरुष सूत्री की रचना को नहीं देख सका। सूत्री श्लोक 19 से 20 में जानवरों के नामकरण के विपरीत जो उसने देखा था, उससे बलिकूल अलग है।

और इसलिए, यह रहस्य को बनाए रखता है और वास्तव में उस महिला का महत्व और परिमाण है जसि उसकी सहायक के रूप में पहचाना जाता है। श्लोक 18 अध्याय एक के विपरीत अच्छा नहीं है, जो बार-बार कहता है कि भगवान के कदम अच्छे हैं क्योंकि अराजकता ब्रह्मांड में बदल जाती है, जसि अंत में मानव जीवन का पोषण और पोषण संभव होता है; वह कहता है कि अध्याय एक में भगवान ने अपनी बनाई व्यवस्था के बारे में जो कहा वह बहुत अच्छा है। इसलिए, मनुष्य के लिए अकेले रहना अच्छा नहीं है, और यह समझ में आता है कि भगवान ने उसके लिए उपयुक्त सहायक क्यों बनाया।

और जसि तरह से भगवान ने महिला को बनाया, अगर आप गौर करेंगे, तो उसमें एक इमारत का विचार है, महिला को एक पसली से बनाया गया है। इसलिए, श्लोक 22 में कहा गया है, भगवान भगवान ने एक महिला का निर्माण किया, एक महिला को एक ठेकेदार की तरह बनाया जो निर्माण करता है, और वह उसे पुरुष के लिए एक उपहार के रूप में लाया। अब, ऐसा क्यों है कि पुरुष के लिए अकेले रहना अच्छा नहीं था? और यह हमारे लिए यह याद रखने में बहुत मददगार है कि जब भगवान ने मानवता का निर्माण किया, तो उन्होंने पुरुष और महिला को सामाजिक प्राणी के रूप में बनाया।

यहाँ एक सूक्ष्म समुदाय है और कैसे पुरुष और महिला एक दूसरे के साथ मलिकर, सामुदायिक संबंध में पनपेंगे, न कि अलग-थलग रहने के लिए। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको याद होगा कि आशीर्वाद में प्रजनन शामिल है। और इसलिए एक पुरुष और एक महिला के निर्माण से, दो अलग-अलग लिंग जो अपने यौन संबंधों के माध्यम से, फरि वे भगवान के आशीर्वाद के एक हिस्से के रूप में एक संतान मानव जीवन का उत्पादन करेंगे।

इसलिए, जब हम इसे एक साथ लेते हैं, मानव भाषा, यह हमें उस देवभाल और अंतरंगता को दिखाती है जो परमेश्वर ने पुरुष और महिला के निर्माण में दी है। मुझे यह भी जोड़ना चाहिए कि श्लोक 18 और श्लोक 20 एक उपयुक्त सहायक की बात करते हैं। यह ऐसी भाषा है जो अपने हबिर् में हड़ताली है, क्योंकि यह शब्दों का एक संयोजन है और इसका अर्थ अनविद्य रूप से एक संगत सहायक है, कोई ऐसा व्यक्ति जो पुरुष के अनुरूप हो।

फरि से, यह एक ऐसा तरीका है जसिमें, एक अलग तरह की भाषा में, एक आम भाषा में, एक संवादात्मक भाषा में, एक अत्यधिक चतुरात्मक चतुर भाषा में, हम छुर्वि के बारे में बात कर रहे हैं और यह कि भगवान ने पुरुष और महिला को अपनी छुर्वि में बनाया है। और इसलिए, पुरुष

और महिला पूरी तरह से मानव प्राणी के रूप में बनाए जाने में साझा करते हैं। उस मानवता के भीतर, हम उनकी कामुकता के आधार पर अंतर कर सकते हैं।

पुरुष और महिला जसि कामुकता में संलग्न होते हैं, वह ईश्वर का आशीर्वाद है। यह ईश्वर द्वारा की गई नयिकता है जिसके द्वारा ईश्वर ने मानव परिवार के लिए जो अच्छा सोचा है, वह एक आशीर्वाद है, जो साकार होगा। मानव कामुकता, जब ईश्वर की इच्छा के अनुसार की जाती है, तो यह एक महान आनंद और आशीर्वाद है।

और फिर मैं यह भी कहूंगा कि ईश्वर शरीर बनाता है, जैसा कि हम पुरुष के निर्माण में देखते हैं और जैसा कि हम स्त्री के निर्माण में देखते हैं, जो लोग शरीर को बुरा मानते हैं, प्राचीन काल में भी और आज भी, जो लोग शरीर का दुरुपयोग करके या इसके विपरीत, शरीर की इच्छाओं को सीमित करके नहीं, बल्कि शरीर में अनैतिकता करके शरीर को वश में करने की कोशिश करते हैं। सुखवादी, बस आनंद से प्रेरित। ये दो चरम सीमाएं हैं जो शरीर के बारे में बाइबल की शिक्षाओं के अनुरूप नहीं हैं।

हम, ईसाई पाठकों के रूप में, कोरथियन पत्राचार से जानते हैं कि प्रेरित पौलुस ने भी व्यक्तियों के शरीर और चर्च को विश्वासियों के शरीर के रूप में बताया है, कि पवित्र आत्मा हमारे शरीर में निवास करता है, और वह ईसाई विश्वासियों में निवास करता है। इसके अलावा, हम कह सकते हैं कि परमेश्वर स्वयं प्रभु यीशु मसीह में पूरी तरह से इस दुनिया में एक इंसान के रूप में आकर मानव शरीर का सम्मान करता है। और फिर, इसके अलावा, उससे भी बढ़कर, शरीर पुनर्जीवित होता है और हमारे पास हमारे प्रभु यीशु मसीह में एक नया पुनर्जीवित शरीर है।

और हम भी, जो मसीह में विश्वास करते हैं, एक पुनर्जीवित शरीर का अनुभव करेंगे जो कि मसीह के साथ स्वर्गीय जीवने के लिए उपयुक्त है। इसलिए, मानव कामुकता ईश्वर का आशीर्वाद है। शरीर ईश्वर का आशीर्वाद है।

बगीचे में जो कुछ घटित होता है, वह परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित है, ताकि पुरुष और स्त्री के लिए अच्छाई को बढ़ावा मिले। इसलिए, जब अध्याय 2 के श्लोक 8 से 14 में वर्णन की बात आती है, तो हम परमेश्वर की सृष्टि की सुंदरता और उत्पादकता को पाते हैं, जिसमें वह पहले पुरुष और फिर स्त्री को रखता है। ध्यान दें कि श्लोक 9 में क्या कहा गया है, सभी प्रकार के पेड़, ठीक वैसे ही जैसे हमने अध्याय 1 के सृष्टि वृत्तांत में विविधता देखी और कैसे सजीव जीवन के प्रत्येक सृजन चरण ने अपने-अपने प्रकार के अनुसार खुद को उत्पन्न किया।

अब, जब बात खुद को पुनरुत्पादित करने वाले पेड़ की आती है, तो हमारे पास कई तरह के पेड़ हैं। और हमें बताया गया है कि यह देखने में अच्छा लगता है। यह आकर्षक, अच्छा और पौष्टिक भोजन स्रोत है जो मानव जीवन को बनाए रखेगा।

और उसमें प्रमुख रूप से दो पेड़ थे। पहला पेड़, जीवन का पेड़, यह दर्शाता था कि बगीचे में जीवन उपलब्ध था और जीवन के पेड़ का हिससा बनकर, एक व्यक्तियों का जीवन कायम रहेगा। पुरुषों और महिलाओं को शुरू में अमर के रूप में नहीं बनाया गया था।

वे नश्वर के रूप में बनाए गए थे । केवल परमेश्वर ही, अपने संवधान में, अपने अस्तित्व में, अमर हैं। पुरुष और महिलाएँ परमेश्वर के साथ अनंत जीवन में प्रवेश कर सकते हैं, अनंत जीवन में, जैसा कि प्रेरति पौलुस 1 कुरनिथियों 15 में कहता है, कि इस नश्वर शरीर को इस नश्वरता में अमरता में बदल दिया जाएगा।

तो, जीवन का पेड़ बगीचे में मौजूद जीवन सिद्धांत का प्रतनिधि है। और इसका संबंध बगीचे में परमेश्वर की उपस्थिति से है। दूसरा पेड़ अच्छाई और बुराई के ज्ञान का पेड़ है।

और जबकि इस बात को लेकर काफी बहस चल रही है कि इस पेड़ से क्या संबंध है, मुझे लगता है कि यह नषिकर्ष नकालने के लिए अच्छे कारण हैं कि अच्छाई और बुराई का ज्ञान ज्ञान से जुड़ा है। और प्राचीन काल में यह एक महान खोज थी। ज्ञान को महत्व दिया जाता था, और प्राचीन नकिट पूर्व में उनकी पौराणिक कहानियों में जीवन और ज्ञान की खोज में इसकी बहुत मांग की जाती थी।

और मानवता की ओर से ये दो महान इच्छाएँ हम में से हर एक में बनी रहती हैं, जीवन की चाहत और साथ ही ईश्वर की बुद्धि की चाहत ताकि हम जान सकें कि अपने जीवन को प्रभावी ढंग से कैसे जिया जाए। इसलिए, ईश्वर ने हमें इच्छाएँ दी हैं। खाने की इच्छा होना अच्छी बात है।

यह अच्छी बात है कि आपमें काम करने की इच्छा है। यह अच्छी बात है कि आपमें यौन संबंध बनाने और परिवार बनाने की इच्छा है। यह सब और भी बहुत कुछ, बगीचे की सौंदर्यपूर्ण सुंदरता, जैसा कि श्लोक 10 से 14 में वर्णित है, सोने और गोमेद पत्थर की सुंदरता और बगीचे के विभिन्न भागों की सुंदरता।

अब, यह सब अच्छी इच्छा है, लेकिन हम अपनी इच्छाओं के गुलाम नहीं हो सकते। बल्कि, हमारी इच्छाओं को मूल्यवान बनाने के लिए, हमारी इच्छाओं को नासमझ मजबूरी और जुनून से मुक्त करने के लिए जो अनविरय रूप से नरिशा और वनिश की ओर ले जाता है, उन्हें ईश्वर की भलाई द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए, जो हमें दिखाता है कि हमारी इच्छाओं को ईश्वर की उस महान भलाई के अधीन होना चाहिए जो हमारे लिए है, उसकी इच्छा। और इसलिए हम ईश्वर की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करते हैं क्योंकि यह हमारी इच्छाओं को सीमित करती है ताकि हम अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर सकें, न कि हमारी इच्छाएँ हमें नियंत्रित करें।

जब हम साधारण इच्छाओं पर काम करते हैं, जैसा कि हम अध्याय 3 में देखेंगे, महिला और पुरुष की ओर से, हम दुख की बात है कि उन इच्छाओं की संतुष्टि सीमित है, जो पूर्णता और संपूर्णता की भावना में है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि भोजन के लिए आपकी इच्छा एक नियंत्रित जुनून है, तो आप पाएंगे कि आपको खाना चाहिए, और संतुष्ट होने के लिए, आपको अधिक खाना होगा, लेकिन आप संतुष्ट नहीं हो सकते क्योंकि आपको अगला भोजन और अगले दिन और अगले दिन खाना है, और यह वनिशकारी हो सकता है। जबकि जब हम ईश्वर की इच्छा, उनके प्रेम और प्रावधान की भलाई, उनकी उपस्थिति की भलाई का अभ्यास करते हैं, तो यह सब हमारे जीवन में ईश्वर की सुंदरता, अनुग्रह, भलाई, दयालुता और उसे जानने के लिए हमारे जीवन में सशक्तीकरण का एहसास कराएगा।

और उसे जानने से हम खुद को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं और खुद को जान पाते हैं। यह सब इस बात से जुड़ा है कि हम अध्याय 2 में

सृष्टि में परमेश्वर के सबसे अनुकूल, सुंदर कार्य की तुलना कैसे करते हैं। और फरि , दुख की बात है कि अध्याय 3 में, हम इसे सृष्टि के लिए परमेश्वर के मन में जो कुछ है, उसके उलट होने के रूप में बोलेंगे।

मैं इस सत्र, भाग एक, का समापन पुरुष और महिला की ऐतिहासिकता और विशेष रूप से आदम और हव्वा के नामकरण के बारे में कुछ शब्दों के साथ करना चाहता हूँ। क्या वे वास्तविक, ऐतिहासिक, वास्तविक व्यक्तियाँ थीं, या क्या वे केवल मानवता को उसके सबसे व्यापक अर्थ में दर्शाते थे? आदम और हव्वा की कहानी बस यही है: एक ऐसी कहानी जिसका कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं है जो घटित हुआ या जो वास्तविक था। और हम ऐतिहासिक शब्द का प्रयोग शायद ही रूप से उस चीज़ का वर्णन करने के लिए करते हैं जो वास्तविकता से वास्तविकता के अनुरूप होती है।

मुझे लगता है कि आदम और हव्वा को दो वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के रूप में लेने के लिए सबसे अच्छे कारण उत्पत्ति में ही हैं। सबसे पहले, उपरलिख। आपको याद होगा कि उपरलिख 11 है, और वे अब्राहम से शुरू होकर अध्याय 1 से 11 के आदमि इतिहास से अध्याय 12 से 50 के विशेष कुलपति इतिहास तक जाते हैं।

और जैसी तरह अब्राहम और इसहाक और याकूब और याकूब के 12 बेटों को लेखक ने वास्तविक सेटिंग में वास्तविक व्यक्तियों के रूप में वर्णित किया है, जैसी ऐतिहासिक रूप से इतिहास की उस अवधि से जोड़ा जा सकता है जैसे हम भौतिक वस्तुओं और लिखित वस्तुओं दोनों से मध्य कांस्य युग से लेकर कांस्य युग के अंत तक, लगभग 2200 से 1500 तक प्राप्त कर पाए हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम यह पुष्टि करने में सक्षम हैं कि अब्राहम और उसके परिवार का वर्णन वास्तविक इतिहास में फिट बैठता है, क्योंकि उपरलिख, ये उत्पत्ति के दोनों हिस्सों को जोड़ने वाली पीढ़ियाँ हैं, तो लेखक चाहते हैं कि हम अध्याय 1 से 11 को भी वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में समझें। हाँ, इतिहास से अलग तरीके से बताया गया है जैसे बाइबल में और समकालीन समय में भी कई बार समझाया और बताया गया है, बहुत अधिक चित्रण का उपयोग करते हुए, एक तरह की, हाँ, मानव-केंद्रित, मानव-समझी हुई भाषा ताकि हम बेहतर ढंग से समझ सकें, तकनीकी, वैज्ञानिक और कभी-कभी ऐतिहासिक तकनीकी भाषा के विपरीत। इसलिए, उपरलिखित बातों को, कम से कम लेखक की ओर से, आप स्वीकार कर सकते हैं या अस्वीकार कर सकते हैं, आदम और हव्वा को वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के रूप में समझा गया है, साथ ही नूह को भी, और फरि नूह के वंशजों को अब्राहम के वंशजों से जोड़ा गया है।

आदम और हव्वा उतने ही वास्तविक हैं जितने आदम अब्राहम के लिए और हव्वा उसकी पत्नी सारा के लिए। फरि, इसे दूसरे तरीके से समझाया गया है: वंशावली। जब आप अध्याय 5 और अध्याय 11 की वंशावली लेते हैं, शैत की वंशावली जो नूह तक जाती है, और फरि अध्याय 11 में नूह के बेटे शैत की वंशावली जो अब्राहम तक जाती है, तो वंशावली के द्वारा, आपको आदम से नूह और फरि अब्राहम तक का संबंध मिलता है।

और इसलिए, वंशावली के द्वारा, लेखक हमें बता रहा है कि ये वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियाँ हैं और पहले मनुष्य, दूसरे आदम के बीच एक संबंध है, क्योंकि नूह और उसका परिवार जलप्रलय से बच गया था, और फरि अब्राहम का विशेष परिवार जिसके माध्यम से हमें बताया जाएगा कि परमेश्वर के मन में सभी के लिए उपलब्ध आशीर्वाद है। यह बर्गीचे की कहानी का पहला भाग है। हमारे दूसरे भाग में, हम अध्याय 2 के अंत में, अंतिम छंद 24 और 25 से कहानी को आगे बढ़ाएंगे, और फरि हम

बगीचे में हुए पाप के बारे में बात करेंगे जिसने मानवता के लिए परमेश्वर की अच्छी योजना को बाधति तो कयिा लेकनि पूरी तरह से और पूरी तरह से अप्रचलति नहीं कयिा।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं जो उत्पत्ति की पुस्तक पर अपनी शक्ति दे रहे हैं। यह सत्र 3A, द गार्डन स्टोरी, भाग 1, उत्पत्ति 2:4-3:24 है।